श्री महाराज जी द्वारा उपदेशित प्रार्थना

श्री महाराज जी सभी भक्तों को निम्न लिखित प्रार्थना पूरे दिन में चार बार करने के लिये कहा करते थे। आश्रम में तो यही प्रार्थना श्री महाराज जी के आदेशानुसार प्रतिदिन ही होती थी और आज भी नियमित रूप से हो रही है। इस प्रार्थना का समय श्री महाराज जी के अनुसार प्रातःकाल, द्वितीय प्रहर, सायंकाल तथा मध्य रात्रि को था। परंतु भक्तगंढ़ अपनी सुविधानुसार जिस समय को भी अनुकूल पायें, इस प्रार्थना का पाठ अवश्य करें। कम से कम एक बार तो अवश्य ही करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

ॐ यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे। तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत्।।

हे तेज पुंज ज्योतिः स्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनंद के देने वाले! विजय कराने वाले! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य! सबको उत्पन्न करने वाले! सबकी रक्षा करने वाले! सबका संहार करने वाले! सबको प्रेरणा करने वाले! अनंत अपार आनंदस्वरूप ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हममें प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हममें तेरी सच्ची भक्ति व प्रेम प्रकट होवे। सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि एवं बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनंद पूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनंत बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो। एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

हे परमेश्वर! परमपिता परमात्मन्! आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हो। हम सब मिलकर एक तुम्हारी ही भक्ति करें। तुम्हारे ही चरणों में श्रद्धा-भक्ति पूर्वक सिर झुकाते रहें और एक मात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें। ऐ हमारे आत्मा जगदीश्वर आप अनंत क्षमास्वरूप और दयालु हो। हे करुणा सागर! हम तुम्हें छोड़कर और किस की शरण लें? केवल एकमात्र तुम ही हमारे आधार और अधिष्ठान हो। हे हमारे सर्वस्व परमात्मन्! हम तुम्हारे पवित्र चरणों को बारंबार प्रणाम करते हैं। आप ही हमारी टेक हो और पता रखने वाले हो। प्रतिज्ञा पर आप ही दृढ़ता के स्थिति स्थापक हो। हे अनंत अपार प्रकाश स्वरूप, पवित्र ज्योति परमात्मन्! आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्ग से अपनी प्राप्ति की ओर ले चलो। आप ही हमारे सत्पथ प्रदर्शक नेता तथा संचालक हो। हे अंतर्यामिन्! हम तेरे हैं, हमको अंतर्यामी रूप से प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्ग पर चलें जिस पर तेरे पूर्ण भक्त, ऋषि-महर्षि चले हैं और तुझको प्राप्त हो चुके हैं। जिन पर तुम्हारा परम अनुग्रह और प्रसाद हुआ हो। हे सर्व शक्तिमान् हमारे प्रभु! हमें उस मार्ग पर कभी मत चलाओ जिस पर तेरे अभक्त चले हों। तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें। हे प्रभु! तुम हमारे अंतर्यामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं, अतएव हमारी रक्षा करो। हे जगदीश्वर, जगदाधार! हमको वह पवित्र दृढ़ात्मिका बुद्धि प्रदान करो कि जिसमें केवल एक मात्र तुम्हारा ही दृढ़ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अहंकार दो जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें। मन में तुम्हारा ही शिव संकल्प उठे। चित्त में तुम्हारा ही चिंतन रहे। हमारे नेत्र व हृदय खुले हों, और उनपर तुम्हारा पूरा अधिकार हो। हमारे सबके द्वारा केवल आप की ही जय हो। आप हमारे जीवन के नियंता प्राणस्वरूप हो। हे स्वामिन्! हमारी सब क्रियायें और चेष्टायें आपके चरणों में समर्पित होवें। हमारे भाव महान, उदार तथा गंभीर हों। हम सब प्राणी मात्र को अपना ही आत्मा जानें और सबकी भलाई में ही अपनी भलाई समझें। अहर्निश परोपकार में रत रहें और तुम्हारी ही भक्ति का सर्वत्र प्रचार करते हुए, अपने जीवन को सफल करते हुए, तुम्हारे पवित्र ज्योतिर्मय चरणों के समीप बैठने के योग्य बनें। हे पतितपावन! दीनों का उद्धार करने वाले परमात्मन्! हमको ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन-दुखियों की सहायता सच्चे हार्दिक भाव से करें। हमें तुम्हारे प्रेम में ही जीवन प्रिय हो। हे विश्वात्मा! विश्वस्वरूप! हम तुम्हारे भक्ति मार्ग पर चलते हुए महान दुःखों को भी सानंद सहन कर सकें। तुम्हारे भजन में दृढ़ रहें। सब के साथ पवित्र प्रेम करें। हे प्रेमाकार! हम सबको अपना ही आत्मा जानें। हमारा आचरण सबकी भलाई के लिये ही हो। हे अनंतशक्ति परमात्मन्! आपकी शक्तियाँ अपरिमित और बेअंदाज हैं। तुम्हारी दात से कोई बढ़ नहीं सकता है। तुम्हारी दक्षिणा ज्योति की तरह सबके ऊपर जगमगा रही है। तुम्हारी शक्तियों और सच्चे उदार वचनों, मेहरबानियों का कोई नियंता नहीं है। कोई नहीं कह सकता कि उसने मुझे नहीं दिया है। तुम्हारे द्वार से कोई निराश नहीं गया है। सबने अभीष्ट फल प्राप्त कर जीवन का फल पाया है। हे राम, कृष्ण आदि अनंत नामों और रूपों को धारण करने वाले हमारे सच्चे प्रभु! अंत में हमारी यही प्रार्थना है कि हममें तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे। हम तेरी ही भक्ति का प्रचार करें। हम सबके द्वारा तुम्हारी ही इच्छा पूर्ण हो, सर्वत्र तुम्हारा ही राज्य हो। हे अनंत, अपार, आनंदस्वरूप, ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! आपको हमारा अनंत बार धन्यवाद हो और आपका हमको आशीर्वाद हो। अतएव सांजलिबद्ध आपको भूयोपि नमस्कारों पर नमस्कार है। ॐ शंकरोतु शंकरः।

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवेति। दूरंगमंज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा वह मन, जो जाग्रत और स्वप्न दोनों ही अवस्थाओं में अत्यधिक वेग से दूर-दूर तक जाता है और लौट भी आता है तथा जो ज्योतियों की भी ज्योति है, शुभ संकल्पों वाला हो।

ॐ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वंति विदथेषु धीराः। यत्पूर्वं यक्षमंतः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा वह मन, जो सारी प्रजा में ओत-प्रोत है, जिस मन का उपयोग बुद्धिमान, विचारवान, आश्चर्यवान और पूजनीय मनुष्य शुभकार्य करने में तथा पाप से लड़ने में करते हैं, शुभ संकल्पों वाला हो।

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरंतरमृतं प्रजासु। यस्मान ऋते किंचनकर्मक्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा वह मन, जो चित्त और धैर्य रूप है तथा सर्व प्राणियों का अंतरात्मा स्वरूप अविनाशी ज्योति है, जिसके बिना कुछ भी कर्म असंभव है, शुभ संकल्पों वाला हो।

ॐ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा वह मन, जो अति शीघ्र ही भूत, भविष्य एवं वर्तमान को जान लेता है और जिसके द्वारा सप्तहोता रूपी इंद्रियों का यज्ञ होता है, शुभ संकल्पों वाला हो।

ॐ यस्मिन्ऋचःसामयजुंपियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः। यस्मिश्चित्तग्वंसर्वमोतंप्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा मन जिसमें ऋगवेद, सामवेद, यजुर्ववेद तथा अथर्ववेद उसी प्रकार रखे हैं जैसे चक्र की नाभि में उसकी कमानें संयुक्त रूप से रहती हैं और जिस मन में प्रजा का ज्ञान तथा तत्वज्ञान ओत-प्रोत है, शुभ संकल्पों वाला हो।

ॐ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मेरा मन, जो सभी प्राणियों को ठीक उसी प्रकार से प्रेरित करता है जिस प्रकार से निपुण सारथि घोड़ों को चलाता है, तथा जो हृदय में स्थित रहते हुए अत्यधिक वेगवान एवं जरा, मृत्यु से रहित है, शुभ संकल्पों वाला हो।

ओं निरंजनम् दुःख भंजनम् ररंकार ओंकार। सत्य पुरुष सोऽहं तू ही, अलखं सर्वाधार।।
ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम करतार। अच्युत गुरु गोविंद दातार, परमानंद रूप निराधार।।
एक अखंड ज्ञान भंडार, तुम्हरी ज्योति का उजियार। मैं-मैं-मैं पन सर्वाधार, नेति-नेति कहे वेद उचार।।
एक आत्मा अपरंपार, शंकर ब्रह्म सर्व को सार। ओत-प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार।।
हरि नारायण अग्नितार, देव-देव मैं करहूँ पुकार। कृष्णानंताचलहम् गौड़, हूँफट अल्ला सर्व पसार।।
विनवौं तुमको बारंबार, प्रीतम प्यार करो उद्धार। तद्वन गणपति नयन मझार, होवे अनंत तुम्हें नमस्कार।।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप। ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप।।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप। सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप।।
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप। ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप।।

ओं नमः शंभवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

श्री गुरुं परमानन्दं वंदे स्वानंदविग्रहम्। यस्य सानिध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
अज्ञानंतिमिरांध्स्य ज्ञानांजंशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।
यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत्। यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति पूजामूलं गुरोर्पदम्। मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा।।

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपं। योगेन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं श्री मद्गुरुम नित्यमहं नमामि।।
परं पराणां परमं पवित्रं परेशमीशं सुरलोकनाथं। सुरासुरैरारचितपादपाद्यं सनातनं लोकगुरुं नमामि।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा भवत्कृपाश्रीमहिमाप्रसादात्। प्राप्तामया श्रीगुरुवे महात्मने नमो नमस्तेस्तु पुनर्नमोस्तु।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्, द्वंदातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यं। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

ओं द्यौ शांतिः अंतरिक्ष ग्वं शांतिः पृथिवी शाम्तिरापः शांतिरोषधयः शांतिः वनस्पतयः शांतिः विश्वदेवः शांतिः।
ब्रह्म शांतिः सर्व ग्वं शांतिः शांतिरेव शांतिः शामा शांतिः रेधि।। ओं शांतिः शांतिः शांतिः।।

हर हर महादेSSSSव। बोलो श्री सद्गुरुदेव की जय।